Original Research Paper Education

अभिरूचि – शोध साहित्य की विश्लेषणात्मक समीक्षा

Sonali Tiwari

ABSTRACT

प्रस्तुत शोध–में शोधकर्ता ने अपने वर्तमान में चल रहे शोध कार्य (माध्यमिक शिक्षा मण्डल मध्य प्रदेश एवं केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा मण्डल के अन्तर्गत अध्ययनरत ग्यारवहीं एवं बारहवीं कक्षा के छात्र एवं छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धियों तथा अभिरूचियों का तुलनात्मक अध्ययन) में से अभिरूचि चर पर गहन अध्ययन व समीक्षात्मक विश्लेषण किया है। विश्लेषणात्मक अध्ययन का मुख्य उद्देश्य अभिरूचि के सन्दर्भ में पूरी जानकारी प्राप्त करना है जिसमें अभिरूचि की परिभाषा, उसका अर्थ, मापन करने की विधियाँ व अन्य शिक्षा–विदों द्वारा किये गये शोध कार्यो का निश्कर्ष भी सम्मिलित है। अतः यह शोध पत्र अभिरूचि नाम के चर जिसे शोध कार्य जिसका शीर्षक माध्यमिक शिक्षा मण्डल मध्य प्रदेश एवं केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा मण्डल के अन्तर्गत अध्ययनरत ग्यारवहीं एवं बारहवीं कक्षा के छात्र एवं छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धियों तथा अभिरूचियों का तुलनात्मक अध्ययन) है के शोध साहित्य का गहन व समीक्षात्मक अध्ययन प्रस्तुत करता है जिससे शोधकर्ता को पूर्णता चर (अभिरूचि) के सन्दर्भ में विस्तृत ज्ञान के साथ–साथ इससे जुड़े ज्ञान के अन्तर (Knowledge Gap) का पता लग सके व आगे भविष्य के शोध कार्यो में किस तरह अभिरूचि (चर) को लेकर भिन्न–भिन्न प्रकार से अध्ययन किया जा सकता है यह स्पष्ट हो जायेगा। शोध साहित्य के विश्लेषण से अभिरूचि (चर) शिक्षा के क्षेत्र में कक्षागत वातावरण में, परीक्षा के समय आदि किस तरह अपनी भूमिका द्वारा छात्रों को लाभान्वित करता है। यह भी अपने–आप में योगदान का बिन्दु है और इसका भी अध्ययन कर शोधकर्ता अपने शोध विषय द्वारा कुछ नया व अनोखा देने का प्रयास कर रही है।

KEYWORDS :

प्रस्तावना:

किसी भी शोध विषय को चुनने से पूर्ण यह अत्यन्त आवश्यक है कि उससे सम्बन्धित शोध साहित्य का अध्ययन तर्क पूर्ण तरीके से किया जाये। इस तरह से किया हुआ अध्ययन निःसन्देह ही शोधार्थी को कुछ नया खोजने व एक ही विषय को अलग–अलग तरह से पढ़ने हेतु उत्सुक व प्रेरित करता है। इस सन्दर्भ में डब्ल्यू0आर0 वोर्ग का कहना है कि ''किसी भी क्षेत्र का साहित्य उस आधार शिला के समान है जिस पर सम्पूर्ण भावी कार्य आधारित है यदि सम्बन्धित साहित्य के सर्वेक्षण द्वारा इस नींव को दृढ़ नही कर लेते है तो हमारा कार्य प्रभावहीन एवं महत्वहीन हो सकता है''।

इसी सन्दर्भ में आगे बात की जाये तो यह स्पष्ट होता है कि किसी भी क्षेत्र के शोध साहित्य का सर्वेक्षण उस विषय की समस्याऐं क्या है, इसे इंगित करता है, जो निश्कर्ष अन्य शोध कार्यो से सामने आये है वह कितने अर्थ पूर्ण है यह पता लगाया जा सकता है, व इसकी सहायता से परिकल्पनाओं का निर्माण करने में भी अत्यधिक सहायता प्राप्त होती है। समीक्षा करने पर अभिरूचियों के मापन की विधियाँ भी समझ आ जायेगी व इस चर को सबसे अधिक वस्तुनिष्ठ ढंग से कैसे मापा जाये यह भी स्पष्ट हो जायेगा।

उपर्युक्त कथनों से यह स्पष्ट हो जाता है कि शोध–साहित्य की समीक्षा कितनी महत्वपूर्ण, रूचिकर व किसी भी शोधार्ती के लिये कितनी चुनौतीपूर्ण भी है।

प्रस्तुत अध्ययन में शोधकर्ता ने 800 छात्रों पर अध्ययन करने का उद्देश्य रखा है व सी0बी0एस0सी0 एवं एम0पी0 बोर्ड के छात्रों को अध्ययन हेतु चुना है। भौगोलिक दृष्टि से म0 प्र0 के ग्वालियर शहर को चुना है।

राहत सुल्ताना द्वारा 2001 में अभिरूचि पर किये हुये अध्ययन के शोध विषय का नाम– A comparative study of the vocational Interest of the students of 1 % standard of urdu and Marathi medium schools of Aurangabad City" था– इस अध्ययन से यह निष्कर्ष सामने आया कि उर्दू और मराठी माध्यम से शिक्षा ग्रहण करने वाले छात्राओं के प्राप्ताकों के मध्यमान में कोई अन्तर नहीं पाया गया, छात्राओं द्वारा सामाजिक क्षेत्रों व वैज्ञानिकों क्षेत्रों में व्यवसाय पाने की अभिरूचि उच्च स्तर की पायी गयी।

वर्ष 2003 में जायसवाल आर0सी0 ने यह बताया कि– जिन विद्यार्थी के माता–पिता उनकी पढ़ाई में रूचि लेते हैं उनकी अभिरूचि उच्च होती है। इस अध्ययन के लिये उन्होनें 300 विद्यार्थियों को कुल न्यायदर्श के रूप में चुना जिसमें से 270 पिछड़े वर्ग के विद्यार्थी में से 30 प्रतिशत कम अंक प्राप्त करने वाले को एक साथ सम्मिलत किया।

नदीम एन0ए0 (2014) में "Study habit Interest Achievement of Kashmiri and Ladhaki Adolescence girl: A comparative study"- इसमें न्यायादर्श के रूप में 200 कश्मीरी और 200 लददाखी छात्राओं को चुना व निश्कर्ष के रूप में यह सामने आया कि कश्मीरी बालिकाओं की अभिरूचि लद्दाखी बालिकाओं से ज्यादा है।

किसी भी शोध साहित्य की समीक्षा का मुख्य उद्देश्य सम्बन्धित शोध में अनछुहे पहलु है उन्हें ढूँढना, व उनके ऊपर कार्य करना है। समीक्षा कमियों व अन्तर को सामने लाती है और शोध में नये तरीकों को अपनाने हेतु दिशा दिखाती है।

किसी भी शोधकर्ता के लिये वर्तमान समय के अध्ययन हेतु पूर्व अनुसन्धानों का महत्वपूर्ण योगदान होता है। इस तरह के पूर्व अनुसंधानों एक आधार शिला की भाँति कार्य करते है। शोध साहित्य की भिन्न–भिन्न प्रकार की समीक्षा कर ऐसे तथ्यों को उजागर किया जा सकता है जिन पर वर्तमान समय में कार्य करने की सबसे ज्यादा आवश्यकता है।

डब्ल्यू0आर0 वोर्ग के अनुसार :

''किसी भी क्षेत्र का साहित्य उस आधारशिला के समान है जिस पर सम्पूर्ण भावी कार्य आधारित है यदि सम्बन्धित साहित्य भावी कार्य आधारित है यदि सम्बन्धित साहित्य के सर्वेक्षण द्वारा इस नींव को दृढ़ नही कर लेते हैं तो हमारा कार्य प्रभावहीन एवं महत्वहीन हो सकता है अथवा पुनरावृत्ति भी हो सकती है।

1. विद्यार्थियों की अभिरूचि में उनके परिवार का बहुत योगदान होता है।
2. बालकों की अभिरूचि उनकी जाति के ही अनुसार भिन्न–भिन्न होती है।
3. ग्रामीण वर्ग के अधिगमकर्ता की अभिरूचि उनके शैक्षिक कार्यो में कम, खेती–किसानी व पारम्परिक कार्यो में अधिक है।
4. अध्ययनकर्ता व अधिगमकर्ता की रूचि उसके लिंग से भी प्रभावित होती है।
5. छात्र–छात्राओं की आर्थिक व सामाजिक स्थिति का प्रभाव भी उनकी अभिरूचि पर पड़ता है।

ज्ञान में अंतर :

विभिन्न प्रकार के शोध साहित्य से जुड़े शोध पत्रों का अध्ययन कर शोधकर्ता इस निश्कर्ष पर पहुँची है कि अभिरूचि एक शैक्षिक मनोविज्ञान में एक अहम विषय है जो छात्रों की उनके विषय के प्रति लगन व मेहनत को निर्देशित करता है व यह भी पता लगाने में योगदान देना है कि भावी जीवन में क्या करेगें। अतः शोधकर्ता ने अभिरूचि के चर के रूप में व उसके विभिन्न कारकों को अध्ययन हेतु चुना।

निष्कर्ष :

अभिरूचि से छात्रों–छात्राओं की किसी विषय, कला हेतु झुकाव को मापा जा सकता है। अभिरूचि बालक की आर्थिक, सामाजिक व शैक्षिक पृष्ठभूमि को प्रभावित करती है। हालाँकि यह भी असत्य नही है कि बालक का मानसिक व शारीरिक स्वास्थ्य भी कहीं न कहीं उसकी अभिरूचि पर प्रभावी होता है। भविष्य में किस प्रकार के विषय को अध्ययन करने हेतु चुने व कैसे रोजगार को अपने जीवन का लक्ष्य बनायें इसमें अभिरूचि का बहुत बड़ा हाथ होता है। अतः इस चर के विभिन्न कारकों के मापन अध्ययन से बालकों की विषय के प्रतिरूप व विकास के साथ–साथ उनकी शैक्षिक उपलब्धि किस प्रकार से या गति से निर्धारित होगी इसका भी पता लगाया जा सकता है। अभिरूचि, सृजनात्मक एवं शैक्षिक उपलब्धि में गहरा सकारात्मक सम्बन्ध है।